संगीत सुनें, संगीत की रचना करें

स्वामी अखण्डानन्द

'मन्दिर में रहो' सत्संग
सिद्धयोग वैश्विक हॉल में सीधा वीडिओ प्रसारण
गुरुवार, २३ अप्रैल, २०२०

नमस्ते! स्वागत!

हम सिद्धयोग वैश्विक हॉल में हैं।

हम भगवान नित्यानन्द के मन्दिर में हैं।

हम श्री मुक्तानन्द आश्रम में हैं।

हम सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा सत्संग में भाग ले रहे हैं।

श्रीगुरुमाई ने इन सत्संगों को शीर्षक प्रदान किया है 'मन्दिर में रहो।'

श्रीगुरुमाई की कृपा से, हम विश्वभर में लागू इस लॉकडाउन के समय का सर्वोत्तम उपयोग करते रहे हैं। सिद्धयोग पथ पर, कई सिद्धयोग अभ्यास हैं। ये अभ्यास सिद्धयोगियों की सहायता करते हैं ताकि वे आत्मा के अनुभव व मुक्ति के लक्ष्य पर अपना केन्द्रण बनाए रखते हुए, अपनी साधना को अत्यन्त सावधानी से कर सकें और सिद्धयोग की सिखावनियों से प्राप्त ज्ञान को अपने दैनिक जीवन में उतार सकें।

मैं पिछले ४६ वर्षों से सिद्धयोग पथ का अनुसरण कर रहा हूँ। सन् १९७४ में मैं पहली बार बाबा मुक्तानन्द से मिला, और बाबा जी से शक्तिपात प्राप्त होने के बाद मेरे जीवन का उद्देश्य बिलकुल स्पष्ट हो गया। मुझे पता था कि मैं क्या करना चाहता हूँ, और वह था सिद्धयोग मिशन की सेवा करना।

अपनी किशोरावस्था में, मैंने शास्त्रीय पद्धति से गिटार बजाना सीखा था, इसलिए जब मैंने सिद्धयोग पथ का अनुसरण करना आरम्भ किया तब संगीत से मेरा गहरा जुड़ाव था। परन्तु जब मैंने आश्रम में रहने के लिए अपना जीवन समर्पित करने का निर्णय लिया तो मुझे लगा कि अब मुझे अपना गिटार बजाने की आवश्यकता नहीं होगी।

तथापि, जब श्रीगुरुमाई को यह पता चला कि मैं एक संगीतकार हूँ और गिटार बजाता हूँ, तो उन्होंने मुझे गिटार वादन जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया और अनेक सत्संगों में मुझे गिटार वादन करने को कहा। आप तो जानते ही हैं कि सिद्धयोग पथ का एक मुख्य अभ्यास है, नामसंकीर्तन। नामसंकीर्तन, आश्रम दिनचर्या का भी एक मुख्य अंग है।

मैंने श्रीगुरुमाई की सलाह को शिरोधार्य किया, और इससे मुझे यह सीखने का अवसर मिला कि सिद्धयोग नामसंकीर्तनों को कैसे बजाना है और शास्त्रीय भारतीय रागों से किस प्रकार तालमेल बैठाना है, उनसे नई धुनों की रचना कैसे करनी है। जब मैं इस संगीत को बजाता हूँ तो यह सहज ही मेरे मन को आकृष्ट करता है कि मैं हर स्वर की शुद्ध ध्वनि का रसास्वादन करूँ। और यह रसास्वादन मेरे मन और हृदय में समरसता व प्रशान्ति ले आता है।

इन वर्षों में, मैंने गुरुमाई जी से सीखा है कि नामसंकीर्तन में, और सामान्य तौर पर संगीत में वह शक्ति होती है जो हर कार्य को शुद्ध कर देती है। बहुत सालों पहले, श्रीगुरुमाई के कहने पर, मैं नित्यानन्द झील के आस-पास परिदृश्य को सुन्दर बनाने के एक गार्डन प्रोजेक्ट हेतु सेवा अर्पित कर रहा था। इस महान कार्य को करते हुए मैं धरती माँ का सम्मान करना चाहता था। और मैंने गुरुमाई जी से पूछा कि मैं इसे सर्वश्रेष्ठ रूप से किस प्रकार कर सकता हूँ।

गुरुमाई जी क्षण भर के लिए रुकीं और क्षितिज की ओर देखने लगीं। उन्होनें कहा, "मन्त्रोच्चार करो। देवी के लिए, भूमि देवी के लिए मन्त्रोच्चार करो।" उन विगत वर्षों में जब मैं यह सेवा कर रहा था तो नित्यानन्द झील के आस-पास की भूमि पर चलते-फिरते, घूमते हुए, मैं इन मन्त्रों को गाता। इस मन्त्रगान से, मैंने अनुभव किया कि पेड़-पौधों, जल और मिट्टी से सम्बन्धित जो कार्य सम्पन्न हो रहा था उसके अलावा, मैं धरती माँ के प्रति एक नया आदरभाव महसूस करने लगा और प्रकृति में निहित दिव्यता के प्रति मुझमें पहले से कहीं अधिक गहन जागरूकता का विकास होने लगा।

भारतीय शास्त्रों में कहा गया है, 'संगीत है योग।' संगीत योग है। संगीत, ईश्वर से ऐक्य का मार्ग है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ध्वनि का, नाद का—और इसीलिए समस्त संगीत का—उद्भव मूलतः ईश्वर से ही हुआ है। शास्त्रों का कथन है कि ईश्वर ने नाद के माध्यम से इस ब्रह्माण्ड की रचना की। अतः,

हम संगीत के नाद-स्पन्दनों के साथ बने रहकर, उनका अनुसरण करते हुए पुनः इनके स्रोत तक, ईश्वर तक पहुँच सकते हैं। पुनः आत्मा तक पहुँच सकते हैं।

जब हम संगीत की रचना करते हैं और उसे सुनते हैं, तब हमारा पूरा अस्तित्व उसमें सम्मिलित होता है—हमारा भौतिक शरीर, हमारा मन, हमारी भावनाएँ, हमारा हृदय और हमारी आत्मा। संगीत-रचना करने में वह शक्ति है जिससे हमारे अस्तित्व के ये सभी पहलू सन्तुलित होते हैं व एकजुट होते हैं। संगीत हमारी सिद्धयोग साधना के लिए एक महान सम्बल है। जैसा कि भारतीय शास्त्रों में कहा गया है, संगीत योग है।

मैं, क्योंकि एक ऐसा सिद्धयोग स्वामी हूँ जिसकी पृष्ठभूमि में संगीत रहा है, अतः मेरे पास एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन की संगीत-मण्डली के साथ सेवा अर्पित करने का सुअवसर है। मुझे यह सेवा करना बहुत अच्छा लगता है क्योंकि मैं ग़ौर से देख पाता हूँ कि कैसे श्रीगुरुमाई अपनी सत्ता के रोम-रोम के साथ गाती हैं, कैसे वे संगीत के भाव और उसकी संरचना के साथ सम्पूर्ण रूप से जुड़ जाती हैं। जब मैं उस 'संगीत-स्थान' में प्रवेश करता हूँ जहाँ मुझे लगता है कि गुरुमाई जी हैं, तब मैं अनुभव करता हूँ कि श्रीगुरुमाई की सम्पूर्ण सत्ता ही नामसंकीर्तन की ध्वनि बन गई है। इससे मुझे यह दृढ़ विश्वास हो जाता है कि जब मैं नामसंकीर्तन कर रहा होता हूँ, तब मेरी श्रीगुरु और नामसंकीर्तन, दोनों एक ही हैं। और जैसे-जैसे मैं इस दिव्यता में लीन होता जाता हूँ, मैं भी उसके साथ एक हो जाता हूँ। मेरी श्रीगुरु में, नामसंकीर्तन में और एक शिष्य के रूप में, मुझमें कोई अन्तर नहीं रह जाता। हम सब वही एक परम चेतना, एक ही दिव्य नाद बन जाते हैं।

अहा, मझे संगीत कितना प्रिय है।
अहा, मुझे नामसंकीर्तन करना कितना प्रिय है।

१९वीं शताब्दी के प्रतिष्ठित अमरीकी कवि, हैनरी वॅड्स्वर्थ लॉन्गफ़ैलो, कहते हैं, "संगीत मानवजाति की वैश्विक भाषा है।" जिस किसी में भी संगीत की सुमधुर भाषा को समझने की क्षमता है, वह जानता है कि किस प्रकार संगीत में लोगों को क़रीब लाने की, उनके दिलों को खोलने की और एकता लाने की शक्ति है।

अभी पिछले ही सप्ताह, 'मन्दिर में रहो' सत्संग के दौरान, शाम्भवी क्रिश्चन ने "One World: Together at Home," [एक विश्व : घर पर एक-साथ] के बारे में बताया था। बहुत-से संगीतकारों, कलाकारों और अन्य अदाकारों के साथ मिलकर ग्लोबल सिटिज़न ग्रुप [विश्व नागरिक समुदाय] ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया था। ग्लोबल सिटिज़न एक विश्वव्यापी लाभ-निरपेक्ष संस्था है।

"One World: Together at Home" कार्यक्रम विश्व स्वास्थ्य संगठन [WHO] के प्रयत्नों को समर्थन देने के लिए आयोजित किया गया था और इसका उद्देश्य था, वर्तमान महामारी का सामना करने हेतु लोगों को एकजुट करना। क्या अनूठी पहल थी! कितनी शानदार उपलब्धि!"

मैंने कई सिद्धयोगियों से सुना कि उन्होनें सत्संग के थोड़ी ही देर बाद "One World" [एक विश्व] कार्यक्रम देखा। उन्होंने मुझे बताया कि जो गाने उन्होंने सुने, वे उन्हें बहुत पसन्द आए क्योंकि इन गानों से उनके हृदय को शान्ति मिली और इससे विश्व भर के लिए उनकी आशा भी बँधी।

यह है संगीत की शक्ति। यह है एक उद्देश्य, एक संकल्प, एक लक्ष्य को मन में रखकर, एकजुट हो जाने की शक्ति।

अहा, मझे संगीत कितना प्रिय है।
अहा, मुझे नामसंकीर्तन करना कितना प्रिय है।

इस समय, कोविड-१९ के कारण, पूरा विश्व एक चुनौतीभरी परिस्थिति से गुज़र रहा है—एक ऐसी चुनौती जो अपने आप में बहुत अलग है। तथापि, सिद्धयोगी होने के नाते, हमने सीखा है कि हम कैसे हर परिस्थिति का सामना गरिमा और सच्चाई से करें। हम आसानी से दिल छोटा नहीं करते और इसका कारण है कि हमारे पास श्रीगुरु की कृपा है। हम जानते हैं कि नामसंकीर्तन कैसे किया जाता है। हम जानते हैं कि प्रार्थना कैसे की जाती है, विशेषकर इस भयावह समय में।

हमें प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए, न केवल अपने लिए, बल्कि एक-दूसरे के लिए भी। यह अत्यावश्यक है, क्योंकि किसी भी एक अकेले इंसान के पास अपने आप में इतनी शक्ति या इतनी योग्यता या इतनी बुद्धिमत्ता नहीं कि वह इतना विशाल सकारात्मक बदलाव ला सके जिसकी इस समय आवश्यकता है। इस संसार की खुशहाली के लिए हमें एक होना होगा।

इस भीषण व दुस्तर प्रतीत होने वाली चुनौती पर विजय पाने के लिए, हर किसी को एकजुट होना होगा। हम में से हरेक को अपनी भूमिका निभानी होगी और इसे हमें पूरी निष्ठा के साथ, सावधानी से, स्वेच्छा से, उदारता से, खुशी से, प्रेम से, परवाह से, ध्यान से, समझदारी से, मधुरता से, और निःस्वार्थ, परोपकार भाव के साथ करना चाहिए। मैं सद्गुणों का सहारा ले रहा हूँ, उस 'सद्गुण वैभव' का जिसके विषय में श्रीगुरुमाई ने हमें सिखाया है। श्रीगुरुमाई ने हमें निर्देश दिया है कि विशेषकर इस समय के दौरान हम उन सद्गुणों का आवाहन करें जिनका अध्ययन हम सिद्धयोग पथ पर पिछले कई वर्षों से करते आ रहे हैं।

अहा, मझे संगीत कितना प्रिय है।

अहा, मुझे नामसंकीर्तन करना कितना प्रिय है।

मैं संगीत की बात क्यों कर रहा हूँ?

क्योंकि . . . आज के इस 'मन्दिर में रहो' सत्संग के दौरान, सिद्धयोग वैश्विक हॉल में हो रहे इस सीधे वीडिओ प्रसारण के दौरान, हम एक "ध्वनि स्नान" करने वाले हैं। हाँ, मैंने "ध्वनि स्नान" ही कहा। दो सिद्धयोग संगीतकार इस सत्संग में भारत से जुड़ रहे हैं और वे भारतीय शास्त्रीय संगीत सुनाएँगे जिसमें शामिल हैं भजन, जो कि हिन्दी भाषा में लिखे भक्तिगीत हैं।

संगीतकारों की भावपूर्ण और सुरीली प्रस्तुतियों के बाद, स्वामी जी ने अपनी वार्ता में आगे कहा।

सिद्धयोग पथ के बारे में एक चीज़ जो मुझे बहुत, बहुत, बहुत प्रिय है, वह यह कि हर सिद्धयोग सत्संग में हम संगीत से संगीत की ओर, संगीत से संगीत की ओर बढ़ते चले जाते हैं! मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे हमें आत्मा के अनवरत संगीत का प्रसाद मिला है।

हाल ही में श्रीगुरुमाई ने मुझे बताया कि उन्होंने एक लेख पढ़ा था जिसमें यह बताया गया था कि रेत के टीले किस प्रकार संगीत की रचना करते हैं। यदि आप बहुत ही एकाग्र होकर सुनें तो आपको वे विभिन्न ध्वनियाँ सुनाई दे सकती हैं जो रेत के टीलों के गाते समय निकलती हैं।

नेशनल ज्योग्राफ़िक के साथ कार्यरत वैज्ञानिकों ने उन संगीत के सुरों का अध्ययन किया है जो ऊँचे रेत के टीलों से निकलते हैं। जब टीलों पर से रेत फिसलती है तो टीले वास्तव में उसी तरह कम्पित होते हैं जैसे वायलिन पर गज चलाने से उसका तार कम्पित होता है। विश्वभर में दर्जनों ऐसे रेत के टीले हैं जो संगीत की रचना करते हैं, जिनसे बहुत-सी ध्वनियाँ और मधुर स्वर निकलते हैं।

और हम सबने बहते हुए पानी के संगीत को तो सुना ही है—एक सोते से फूटने वाले झरने के प्रवाह से लेकर एक छोटी-सी सरिता की कलकल ध्वनि तक, तेज़ी-से बहती एक नदी के अनवरत स्वर से लेकर समुद्रतट से टकराती मन्द-मन्द लहरों की लोरी तक।

और फिर पेड़ों के बीच से गुज़रती हवा का संगीत भी तो है। आप में से कुछ लोगों को याद होगा कि गुरुमाई जी ने 'मदर्स डे' [मातृ-दिवस] २०१९ की अपनी कविता में इस ध्वनि के बारे में लिखा था, जब उन्होंने एक माँ के संवेगों की 'सरसराहट' का वर्णन किया था।

हम मिट्टी से बने हैं। हम पानी से बने हैं। अतः हम संगीत सुन सकते हैं और हम संगीत की रचना कर सकते हैं।

वस्तुतः, हमारे द्वारा की गई हर हरकत संगीत की ध्वनि को उत्पन्न करती है। इस ग्रह पर ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ संगीत नहीं—इसका अर्थ है कि संगीत हर कहीं है।

अहा, मझे संगीत कितना प्रिय है।
अहा, मुझे नामसंकीर्तन करना कितना प्रिय है।

आज 'मन्दिर में रहो' सत्संग में, सिद्धयोग वैश्विक हॉल में भगवान नित्यानन्द के तेजोमय सान्निध्य में, हम सबने "ध्वनि स्नान" का उपहार प्राप्त किया। हमने श्रीगुरुमाई द्वारा प्रदान किए गए जीवन-रूपान्तरणकारी प्रज्ञान पर मनन किया। हमने भारत के पावन संगीत में स्वयं को निमग्न किया और हमने सिद्धयोग संगीत के अभ्यास में अपनी आवाज़ व हृदय को जोड़ा।

इस कष्टप्रद समय में जिसमें कई अज्ञात पहेलियाँ हैं, हमें अपनी श्रीगुरु के समयातीत प्रज्ञान की शरण लेने की याद रखनी चाहिए। ऐसा करने से हमारे मन, हृदय और आत्मा को उनका अपना सत्त्व प्राप्त होता है—और हम इस वर्ष के श्रीगुरुमाई के सन्देश की अनुभूति करते हैं। आत्मा की प्रशान्ति।

आपको पता ही है कि आपको क्या करना है। और वह है कृपा में आश्रय लेना, कृपा की शरण में आना।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।